कक्षा – XII

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजारिया बावड़ी तिंवरी

प्री बोर्ड – 2022 समय 2.30 घंटे पूर्णांक – 80

खंड – अ

1. मानव-जीवन के आदिकाल में अनुशासन की कोई संकल्पना नहीं थी और न आज की भाँति बड़े-बड़े नगर या राज्य ही थे। मानव जंगल में रहता था। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत उसके जीवन पर पूर्णतः चरितार्थ होती थी। व्यक्ति पर किसी भी नियम का बंधन या किसी प्रकार के कर्तव्यों का दायित्व नहीं था, किन्तु इतना स्वतंत्र और निरंकुश होते हुए भी मानव प्रसन्न नहीं था। आपसी टकराव होते थे, अधिकारों-कर्तव्यों में संघर्ष होता था और नियमों की कमी उसे खलती थी। धीरे-धीरे उसकी अपनी ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज और राज्य का उद्भव और विकास हुआ।अपने उद्देश्य की सिद्धि एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव ने अन्ततः कुछ नियमों का निर्माण किया। उनमें से कुछ नियमों के पालन करवाने का अधिकार राज्य को और कुछ समाज को दे दिया गया। व्यक्ति के बहुमुखी विकास में सहायक होने वाले इन नियमों का पालन ही अनुशासन कहलाता है। अनुभव सबसे बड़ा शिक्षक होता है। समाज ने प्रारंभ में अपने अनुभवों से ही अनुशासन के इन नियमों को सीखा, विकसित किया और सुव्यवस्थित किया होगा। 1X6 = 6

i. इस गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक हो सकता है –
(अ) जीवन का उद्देश्य (ब) अनुशासन की संकल्पना (स) जिसकी लाठी उसकी भैंस (द) आवश्यकता आविष्कार की जननी है

ii. 'अनुशासन' से अभिप्रेत है –
(अ) शासन द्वारा निर्धारित नियमों की पहचान और परख (ब)व्यक्ति द्वारा अपने बहुमुखी विकास के लिए बनाये गये सामाजिक नियमों का पालन
(स) प्रजा पर शासक का पूर्णरूप से नियंत्रण जिससे राजव्यवस्था सुचारु बन सके (द) शासित द्वारा शासक के आदेशों का सम्यक् रूप से पालन

iii. इस गद्यांश का प्रतिपाद्य है कि मनुष्य को –
(अ) आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पशु बल का प्रयोग करना चाहिए (ब) अधिकारों के लिए संघर्ष करना चाहिए
(स) सामाजिक नियमों का पालन करना चाहिए (द) स्वतंत्र और निरंकुश होना चाहिए

iv. आदिकाल से मानव प्रसन्न नहीं था, क्योंकि –
(अ) उस काल में सामाजिक नियमों का निर्धारण नहीं हुआ था (ब) वह नगरों में न रहकर जंगलों में रहता था
(स) उसकी जीवन-आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती थी (द) उसका जीवन और रहन-सहन सरल न

v. गद्यांश में रेखांकित शब्द से आशय ऐसे व्यक्ति से है –
(अ) जो किसी व्यवस्था को न माने (ब) जिसका व्यवहार कुश जैसा न हो
(स) जो अहं भावना से ग्रस्त हो (द) जो निरपराध एवं निरभिमान हो

vi. जिसकी लाठी उसकी भैंस कहावत का अर्थ है .....

2. नये समाज के लिए, नये जवान है।
नवीन योजना लिए, नया विहान है। रश्मियाँ जगी, जगी युगीन चेतना।
प्राण-प्राण में लिए उमंग भावना। हिन्द के सभी सशक्त नौजवान है।
प्रान्त, क्षेत्र, वाद के भाव हों कभी। हम भाई-भाई एक हैं, अलग नहीं कभी।
एक मानव जाति की सन्तान है सभी। गाँव-गाँव के विहाग राम में बँधे।
राम-राज्य के विचार कर्म से सधे। बाजुओं के जारे का हमें गुमान है।

i. देशवासियों में अलगाव की समाप्ति का उपाय है-
(अ) पारस्परिक मेल-मिलाप (ब)वैचारिक समानता (स)प्रान्तीय एवं क्षेत्रीयता की समाप्ति(द)उन्नति के समान अवसर

ii. भारतीयों को गर्व है- (अ) भाषा का (ब) रामराज्य का (स) भुजाओं के बल का (द) एकता का 1X6 = 6

iii. 'रामराज्य' का अर्थ है- (अ) सबको समान सुख (ब) वैचारिक सम्पन्नता (स) शैक्षिक शक्ति (द) सम्पन्नता

iv. 'नया विहान' का अभिप्राय है- (अ) नया देश (ब) नया युग (स) नई सभ्यता (द) नई संस्कृति

v. नया विहान देश में क्या लाया है? (अ) नई रोशनी (ब) अन्धकार का विनाश (स) नये आविष्कार (द) योजनाएँ

vi. गुमान का समानार्थक है- (अ) घमण्ड (ब) क्रोध (स) नाराजगी (द) भला

3.रिक्त स्थानों की पूर्ती कीजिए –
i. वाह रे अकबर तेरे जे ठाठ नीचे और खाट पंक्ति में .....दोष है
ii. सुनत जुगल कर माल उठाई प्रेम विवस पहिराई न जाई पंक्ति में .....अलंकार है
iii. छंद को पढ़ते समय चरण में जहा विराम की आवश्यकता होती है उसे .....कहते है

iv. हलधर के प्रिय है सदा केशव और किसान पंक्ति में हलधर शब्द .....और .....अर्थ व्यक्त करता है इसमें .....अलंकार है

v,. माधुर्य गुण में .....वर्णों का अभाव होता है

vi. जहाँ चमत्कार शब्द और अर्थ दोनों में होता है .....कहलाते है

1X6 = 6

4. अतिलघुतरात्मक प्रश्न

i. व्यतिरेक अलंकार की परिभाषा लिखिए

ii. समासोक्ति और अन्योक्ति अलंकार की परिभाषा लिखिए

iii. विशेष लेखन की भाषा शैली के दो बिंदु लिखो

iv. कहानी में कथानक का क्या महत्त्व है

v. कविता में बिम्ब विधान का महत्त्व बताइए

vi. मिडिया की भाषा में डेस्क क्या होता है

vii. बीट क्या होता है

viii. तीन ग्राह्य सूत्रों के नाम बताए जिनमे ढेलो की लॉटरी का उल्लेख है

ix. हाथ फ़ैलाने वाले व्यक्ति को कवी ने इमानदार क्यों कहा है

x. पंचवटी की तुलना किससे की गई

xi. घडी के दृष्टान्त से लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है

xii. देवसेना सने अपना अंतिम समय कहाँ व्यतीत किया था

1X12=12

खंड – ब

5. संपादक के नाम पत्र को स्पष्ट कीजिए

6. समाचार लेखन और फीचर लेखन शैली में अंतर को स्पष्ट कीजिए

12X2=24

7. आरोहण पहाड़ी लोगो की जीवनचर्या का भाग है किन्तु वही आरोहण किसी को नौकरी भी दिला सकता है पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए .

8. तो हम भी सौ लाख बार बनायेंगे सूरदास के इस कथन के आलोक में जीवन मूल्य के रूप में सकारात्मक दृष्टिकोण के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त कीजिए

9. जहाँ कोई वापसी नहीं लेख में लेखक ने आधुनिक भारत के नए शरणार्थी किसे कहा है और क्यों

10. दीप अकेला के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए बताइए कि उसे कवि ने स्नेह भरा गर्व भरा एवं मदमदाता क्यों कहा है

11. हमारे आज के इंजिनियर ऐसा क्यों समझते है कि वे पानी का प्रबंध जानते है और पहले के लोग कुछ नहीं जानते

12. केशवदास और अज्ञेय में से किसी एक का जीवन परिचय लिखिए

13. रामचंद्र शुक्ल या ममता कालिया में से किसी एक का जीवन परिचय लिखिए

14. महीं सकल अनरथ कर मूला पंक्ति द्वारा भारत के भावो का स्पष्टीकरण कीजिए

15. भाई बस थोड़ी सी ही धुंध छंटी है अभी कथन किसने किससे कहा और इस संवाद में धुंध से क्या तात्पर्य है

16. सेह पिरिति अनुराग बखानीअ तिल-तिल नूतन होए से विद्यापति का क्या आशय है

खंड – स

17. शेर कहानी के आधार पर हमारी सामजिक राजनितिक व्यवस्था पर टिपण्णी लिखिए **अथवा** प्रेमघन जी की वाग्विदग्धता की विलक्षण वक्रता एवं वचन भंगिमा पर प्रकाश डालिए

3

18. मै जानहु निज नाथ सुभाऊ पंक्तियों के माध्यम से राम की किन विशेषताओ का उल्लेख किया गया है **अथवा** वेदना को रोकने दो कविता के भाव सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए

3

19. नदी का सदानीरा रहना जीवन के स्रोत का सदा जीवित रहना है इस कथन से मानव सभ्यता के लिए नदियों के महत्त्व पर क्या प्रकाश पड़ता है **अथवा** सूरदास जगधर से आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था

4

20. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय, ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तप वृद्ध,' कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई।
भावी, भूत, वर्तमान, जगत बखानत है, केशौदास क्यों हूँ न बखानी काहू पैगई।
वर्णे पति चारिमुख, पूत वर्णे पोंच मुख ,नाती वर्णे षटमुख, तदपि नई नई॥

5

21. सप्रसंग व्याख्या कीजिए

अब संभव ने गौर किया, बिलकुल वही वंफठ, वही उलाहना, वही अंदाज । पुलक से उसका रोम–रोम हिल उठा। हे ईश्वर! उसने कब सोचा था मनोकामना का मौन उद्गार इतनी शीघ्र शुभ परिणाम दिखाएगा। लड़की ने आज गुलाबी परिधान नहीं पहना था पर सफ़ेद साड़ी में लाज से गुलाबी होते हुए उसने मंसा देवी पर एक और चुनरी चढाने का संकल्प लेते हुए सोचा मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत अनूठी है इधर बंधो उधर लग जाती है..

5